रिपोर्ट

हिंदी साहित्य परिषद्

हिंदी विभाग, श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग, श्यामलाल कॉलेज द्वारा दिनांक 28 मार्च, 2019 को हिंदी साहित्य परिषद्, श्यामलाल कॉलेज ने अपना वार्षिकोत्सव मनाया। इस मौके पर विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया। इसके तहत **'रीतिकाव्य का महत्व एवं प्रासंगिकता'** विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी के साथ-साथ छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालयन के हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता थे। प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन ने रीतिकाल के महत्व एवं प्रासंगिकता पर बेहद सारगर्भित एवं उपयोगी वक्तव्य दिया। प्रोफ़ेसर टंडो ने रीतिकाल की परिस्थतियों एवं प्रवृत्तियों पर चर्चा के बाद साहित्य में शास्त्र के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि रीतिकाल शास्त्रों का अनुसरण करता है और हमें भी उसका ज्ञान करता है। इसके अलावा इसकी अभिव्यक्तियाँ काव्य सौन्दर्य का प्रतिमान हैं। इससे पहले कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रविनारायण कर ने पुष्प गुच्छ तथा स्मृति चिह्न देकर प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन का स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ हेमंत कुकरेती ने प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन के वक्तव्य के मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करते हुए हिंदी विभाग तथा श्यामलाल कॉलेज की तरफ से उन्हें कॉलेज में पधारने के लिए धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम का संचालन विभाग के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। विभाग के सभी सदस्य और छात्रों की इस कार्यक्रम में उत्साहजनक उपस्थिति रही। दूसरे विभागों के शिक्षक भी प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन को सुनने के लिए आए। कुल मिलाकर यह आयोजन काफी सफल रहा और विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम को काफी सराहा।

इसके अलावा छात्रों के वार्षिकोत्सव में कई प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया और सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए गए। कुल मिलकर यह कार्यक्रम काफी सफल और छात्रों के हिसाब से काफी उपयोगी रहा।

Figure 1 पूरण चाँद टंडन का विशेष व्याख्यान.

Figure 2 मंच पर (दायें से) हेमंत कुकरेती, प्रिंसिपल प्रो रबी नारायण कर व पूरनचंद टंडन.

Figure 3 विद्यार्थियों को संबोधित करते प्रो पूरनचंद टंडन.